अमृत वाणी

जहाँ मूर्ख नहीं पूजे जाते, जहाँ अन्न की सुरक्षा की जाती है और जहाँ परिवार में कलह नहीं होती, वहाँ लक्ष्मी निवास करती है। *-अथर्ववेद,*

धर्म और विज्ञान के संवाहक स्वामी विवेकानंद

आज विवेकानंद जयंती पर विशेष

स्वामी विवेकानंद जी को यूरोप एवं अमेरिका में लोग जगह-जगह बुलाते थे और उनसे वेदान्त के बारे में पूछते थे। उनसे वेदान्त समझते थे। उनका भाषण सुनने पर यह ज्ञान होता है कि वे विज्ञान से अपना भाषण शुरू करते थे। उस समय के विज्ञान को देखते थे और उसका वेदान्त में किस प्रकार प्रस्तुत किया गया है उसको समझाते थे। उन्होंने पश्चिम को उनके विज्ञान को वेदान्त की भाषा में समझाया और पूर्व को विज्ञान वेदान्त की भाषा में समझाया।

अगर 200 सेकेण्ड में लगभग 468 शब्द बोलने पर सात बार तालियां बजे, ऐसी उपलिब्ध भारत को ही हासिल हो सकती है। दरअसल विश्वधर्म संसद का मकसद कुछ और था। वहां रोमन कैथोलिक धर्म को स्थापित करना था। यह सिद्ध करने का प्रयास था कि रोमन कैथोलिक धर्म सबसे श्रेष्ठ धर्म है। उसको भौतिकता से जोड़कर प्रस्तुत किया गया। स्वामी जी को जानकारी हुई कि विष्व धर्म संसद हो रहा है। उनकी वहां जाने की इच्छा हुई। उन्होंने अपने मित्र को कहा था कि शायद वह धर्म संसद मेरे लिए है। उनको इस चीज का अभ्यास था उन्होंने अपना परिचय कैसे दिया, धन्यवाद देते हुए। उन्होंने पहले जिन चार वाक्यों में धन्यवाद दिया उसने सबका मन मोह लिया। स्वामी विवेकानंद ने भारत के प्रति अपने सपने, कल्पना सब कुछ वाक्यों से ही व्यक्त किये। क्या हम में से कोई आज शिकागो जाकर, शिकागो क्या दिल्ली जाकर या चित्रकूट में ही ये चार वाक्य कह सकता है ? क्या भारतीय सभ्यता की समझ हम में है। उस समय के अमेरिकावासी जो बहुत चालाक, चुस्त और स्वार्थी थे। उन्होंने इस बात को माना कि यह व्यक्ति सर्वश्रेष्ठ है। इसका अनुपालन करने से हमारा कल्याण होने वाला है उस समय के समाचार पत्रों को देखे तो यह सब चीजें मिल जाएंगी।

इसके लिए इसकी बहुत सुंदर व्याख्या बनती है। एक स्वामी तात्यानंद है। उन्होंने इस विषय पर तीन पुस्तकें लिखी। बहुत सरल भाषा में समझाते है, वेदांत में क्या कहा गया है, यह बताते हैं और कि स्वामी विवेकानंद जी ने यूरोप एवं अमेरिका में इस विषय में क्या कहा, से सब लिखा है। तीनों पुस्तकों का अध्ययन करने पर पता चलता है कि धर्म और विज्ञान की शिक्षा, अध्यात्म और विज्ञान की शिक्षा एक ही है। आप ज्ञान से प्रारंभ करते है विज्ञान में जाते है, विज्ञान से आप ज्ञान में जाते है। विज्ञान और ज्ञान को मिलाते हैं तो कहीं न कहीं वह आध्यात्म बनता है। जगदीष चंद्र बोस ने यह सिद्ध किया है कि पौधों को प्यार करने या डाटनें पर अलग-अलग प्रक्रिया होती है। जापान के एक वैज्ञानिक पानी पर प्रयोग किया कि जब पानी को थैंक यू कहा तो उसकी प्रतिक्रिया अलग थी और जब पानी को डांटा तो उसकी अलग। स्वामी जी ने उस समय की भारतीय दशा को देखकर कहा कि चाण्डाल को ब्राम्हण बनाना है। कई स्थानों पर उन्होंने पत्रों में लिखा और अपने भाषणों में कहा है कि चाण्डाल को ब्राम्हण बनाना है, मगर चाण्डाल अर्थात् आपका उपेक्षित वर्ग है। उसके पास इतने संसाधन नहीं है कि वो आपके पास शिक्षा के लिए आयेगा। उन्होंने कहा कि प्यासा कुँआ के पास नहीं आया तो कुँआ को प्यासा के पास जाना होगा। उन्होंने अपने अनुयायियों एवं षिष्यों से कहा कि शिक्षा को परिष्कृत करें। उन्होंने शिक्षा एवं धर्म के बारे में कहा- मेरे देश वासियों 50 वर्षों के लिए सभी देवी-देवताओं को भूल जाइये और अपने राष्ट्र देव को अपना आराध्य देव बनाइए। उस समय के युवाओं ने स्वामी जी की इन बातों को माना, स्वतंत्रता संग्राम में उन्हो ने अपनाया और देश को स्वतंत्र करा कर दिखा दिया। उन सबने राष्ट्र देव की आराधना की और विदेशी ताकतों को भगा दिया। उनके संदेश आज भी चिरस्थायी है। उन्होंने उदाहरण दिया कि अमरीकी गरीब को खाने, पीने, पहनने, ओढ़ने की चिन्ता नहीं है। भारतीय गरीब को खाने, पीने, पहनने, ओढ़ने की चिन्ता हो सकती है परन्तु उसमें नैतिकता है। जो कि अमेरिकन में नहीं है। यह नैतिकता उसके डी.एन.ए. में है वो आज भी है। आज अमरीकी राष्ट्रपति, ब्रिटिष प्रधानमंत्री अपने युवाओं से कहते हैं कि विज्ञान पढ़ लो, भाषा पढ़ लो, गणित पढ़ लो, नहीं तो भारतीय युवा आपका स्थान ले लेंगे। यूरोपियन यूनियन की एक रिपोर्ट आती है तथा इन्टेलीजेन्स एजेन्सी ऑफ अमेरिका की रिपोर्ट आती है। रिपोर्ट में कहा गया है कि 2030 में भारत सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र होने वाला है। 1990 में चीन का उदय हुआ। 2015 में चीन का पतन प्रारंभ हो जाएगा। 2015 में भारत का उदय होने वाला है। जो कम से कम 100 वर्षों तक रहेगा। स्वामी विवेकानन्दजी के सपनों का भारत तो बन रहा है। उसका जाल बुना जा रहा है। थोड़ी-बहुत जो विकृतियां है उन्हें भरना है। हमारी जाति ने 1947 में एक अपराध किया जब भावनावश गांधीजी के आध्यात्म को भुला दिया। गांधीजी के अनुयायियों ने गांधी का आध्यात्म भुला दिया। पूंजीवाद तथा समाजवाद को हमारे देष में लागू किया। यह बहुत बड़ी भूल थी। हमारा युवा जो टेक्नोलॉजी को लेकर कर्मठ होने के नाते, ईमानदार होने के नाते निरन्तर विकास कर रहें हैं। बिल गेट्स ने भारतीय युवाओं के बारे में कहा कि भारतीय युवा सर्वश्रेष्ठ कार्य करता है। कोरिया, चीन तथा श्रीलंकाई व्यक्ति थककर गिर जाता है, लेकिन भारतीय नहीं।

विवेकानंदजी के सपने के भारत में विज्ञान को आध्यात्म से जोड़ना होगा। स्वामीजी ने कहा था कि हमारे पास आपको देने के लिए ज्यादा है और आपके पास हमें देने के लिए कम है। उन्होंने कहा था कि हमें पश्चिम का विज्ञान सीखना है और उन्हें वेदांत एवं आध्यात्म सिखाना है। पश्चिम का विज्ञान लेकर अपने आध्यात्म को समझना और दोनों का मेल करना। आज धर्म और शिक्षा को एक दूसरे का विरोधी बना दिया गया है। विद्यालयों में धर्म पर सांप्रदायिकता का लबादा डाल दिया गया है। धर्म से शिक्षा अलग कैसे हो सकती है? अगर शिक्षा में धर्म नहीं है, अगर राजनीति धर्म नहीं है, राजनीतिक और षिक्षक का कोई धर्म नहीं है तो फिर धर्म क्या है? न कहीं सीमाएं और संहिताएं, आचार्य संहिताएं बांधनी पड़ेगी और उनके अनुसार जो श्रेष्ठतम है वह कार्य करना पड़ेगा।

चन्द्रशेखर साहू
(ये लेखक के अपने विचार हैं)

सामाजिक न्याय की तरफ एक ठोस कदम

भारत की राजनीति का वो दुर्लभ दिन जब विपक्ष अपनी विपक्ष की भूमिका चाहते हुए भी नहीं निभा पाया और न चाहते हुए भी वह सरकार का समर्थन करने के लिए मजबूर हो गयाए इसे क्या कहा जाएए कांग्रेस यह कह कर क्रेडिट लेने की असफल कोशिश कर रही है कि बिना उसके समर्थन के भाजपा इस बिल को पास नहीं करा सकती थी लेकिन सच्चाई यह है कि बाज़ी तो मोदी ही जीतकर ले गए है।

श्आरक्षणष् देश के राजनैतिक पटल पर वो शब्दएजो पहले एक सोच बना फिर उसकी सिफारिश की गई जिसेएएक संविधान संशोधन बिल के रूप में प्रस्तुत किया गयाए और अन्ततः एक कानून बनाकर देश भर में लागू कर दिया गया। आजाद भारत के राजनैतिक इतिहास में 1990 और 2019 ये दोनों ही साल बेहद अहम माने जाएंगे। क्योंकि जब 1990 में तत्कालीन प्रधानमंत्री वी पी सिंह ने देश भर में भारी विरोध के बावजूद मंडल आयोग की रिपोर्ट के आधार पर ष्जातिगत आरक्षणष् को लागू किया था तो उनका यह कदम देश में एक नई राजनैतिक परंपरा की नींव बन कर उभरा था। समाज के बंटवारे पर आधारित जातीगत विभाजित वोट बैंक की राजनीति की नींव।

इस लिहाज से 8 जनवरी 2019 की तारीख उस ऐतिहासिक दिन के रूप में याद की जाएगी जिसने उस राजनीति की नींव ही हिला दी।

क्योंकि मोदी सरकार ने ना केवल संविधान में संशोधन करकेए आर्थिक आधार पर आरक्षण दिए जाने का मार्ग प्रशस्त कर दिया है बल्कि भारत की राजनीति की दिशा बदलने की एक नई नींव भी रख दी है। यह जातिगत वोटबैंक आधारित राजनीति पर केवल राजनैतिक ही नहीं कूटनीतिक विजय भी है। इसे मोदी की कूटनीतिक जीत ही कहा जाएगा कि जिस वोटबैंक की राजनीति सभी विपक्षी दल अब तक कर रहे थेए आज खुद उसी का शिकार हो गए। यह वोटबैंक का गणित ही था कि देश में आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए 10ः आरक्षण लागू करने हेतु 124 वाँ संविधान संशोधन विधेयक राजयसभा में भाजपा अल्पमत में होते हुए भी पारित करा लें जाती है। मोदी सरकार की हर नीति का विरोध करने वाला विपक्ष मोदी को रोकने के लिए अपने विरोधों को भुलाकर महागठबंधन तक बना कर एक होने वाला विपक्ष आज समझ ही नहीं पा रहा कि वो मोदी के इस दांव का सामना कैसे करें। अब खास बात यह है कि अब आरक्षण का लाभ किसी जाति या धर्म विशेष तक सीमित न होकर हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई पारसी और अन्य अनारक्षित समुदायों को मिलेगा। यह देश के समाज की दिशा और सोच बदलने वाला वाकई में एक महत्वपूर्ण कदम है।

यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि इस देश में हर विषय पर राजनीति होती है। शायद इसलिए कुछ लोगों का कहना है कि आर्थिक आधार पर आरक्षण देने का यह फैसला एक राजनैतिक फैसला है जिसे केवल आगामी लोकसभा चुनावों में राजनैतिक लाभ उठाने के उद्देश्य से लिया गया है। तो इन लोगों से एक प्रश्न कि देश के वर्तमान परिदृश्य में कौन सा ऐसा राजनैतिक दल है जो राजनैतिक नफ़ नुकसान देखे बिना कोई कदम उठाना तो दूर की बात हैएएक बयान भी देता हैए कम से कम वर्तमान सरकार का यह कदम विपक्षी दलों के उन गैर जिम्मेदाराना कदमों से तो बेहतर ही है जो देश को धर्म जाति सम्प्रदाय के नाम पर बांट कर समाज में वैमनस्य बढ़ाने का काम करते हैं और नफ़रत की राजनीति करते हैं। याद कीजिए 1990 का वो साल जब ना सिर्फ हमारे कितने जवान बच्चे आरक्षण की आग में झुलसे थे बल्कि आरक्षण के इस कदम ने हमारे समाज को भी दो भागों में बांट कर एक दूसरे के प्रति कटुता उत्पन्न कर दी थी। इसका स्पष्ट उदाहरण हमें तब देखने को मिला था जब अभी कुछ माह पहले ही सरकार ने एट्रोसिटी एक्ट में बदलाव किया था और देश के कई हिस्से हिंसा की आग में जल उठे थे। कहा जा सकता है कि जाति गत भेदभाव की सामाजिक खाई कम होने के बजाए बढ़ती ही जा रही थी। लेकिन अब जाति या सम्प्रदाय सरीखे सभी भेदों को किनारे करते हुए केवल आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षण ने सामाजिक न्याय की दिशा में एक नई पहल का आगाज़ किया है। समय के साथ चलने के लिए समय के साथ बदलना आवश्यक होता है। आज जब आरक्षण की बात हो ही रही है तो यह जानना भी जरूरी है कि आखिर इसकी आवश्यकता क्यों पड़ी।

दरअसल जब देश में आरक्षण की व्यवस्था लागू की गई थी तो उसके मूल में समाज में पिछड़े वर्गों के साथ होने वाले अत्याचार और भेदभाव को देखते हुए उनके सामाजिक और शैक्षणिक पिछड़ेपन को दूर करने के लिए मंडल आयोग द्वारा कुछ सिफारिशें की गई थीं जिनमें से कुछ एक को संशोधन के साथ अपनाया गया था। लेकिन आज इस प्रकार का सामाजिक भेदभाव और शोषण भारतीय समाज में लगभग नहीं के बराबर है। और आज आरक्षण जैसी सुविधा के अतिरिक्त देश के इन शोषित दलित वंचित वर्गों के साथ किसी भी प्रकार के भेदभाव अथवा अन्याय को रोकने के लिए अनेक सशक्त एवं कठोर कानून मौजूदा न्याय व्यवस्था में लागू हैं जिनके बल पर सामाजिक पिछड़ेपन की लड़ाई हम लोग काफ़ी हद तक जीत चुके हैं। अब लड़ाई है शैक्षणिक एवं आर्थिक पिछड़ेपन की। इसी बात को ध्यान में रखते हुए सरकार ने मौजूदा आरक्षण व्यवस्था से छेड़छाड़ नहीं करते हुए इसकी अलग व्यवस्था की है जो अब समाज में आरक्षण के भेदभाव को ही खत्म कर के एक सकारात्मक माहौल बनाने में निश्चित रूप से मददगार होगा। चूंकि अब समाज का हर वर्ग ही आरक्षित हो गया है तो आए दिन समाज के विभिन्न वर्गों द्वारा आरक्षण की मांग और राजनीति पर भी लगाम लगेगी। और अब आखिरी बात जो लोग इसका विरोध यह कहकर कर रहे हैं कि सरकार के इस कदम का कोई मतलब नहीं है क्योंकि नौकरियाँ ही नहीं हैं उनसे एक सवाल। जब मराठाए जाटए पाटीदारएमुस्लिमए आदि आरक्षण की मांग यही लोग करते हैं तब इनका यह तर्क कहाँ चला जाता है।

डॉ नीलम महेंद्र
(ये लेखक के अपने विचार हैं)

किन्नर अप्सरा को राजनीतिक दायित्व मिलना बड़ी शुरुआत

भारतीय राजनीति में समानता के हक की बात करने वालों के लिए भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का एक कदम उत्साहजनक है। कांग्रेस ने किन्नर अप्सरा रेड्डी को महिला कांग्रेस का राष्ट्रीय महासचिव नियुक्त किया है। पत्रकारिता, राजनीति और समाजसेवा में लंबे अरसे से काम कर रहीं अप्सरा को यह दायित्व मिलना एक बड़ी शुरुआत का सुखद संकेत है। कोई बड़ी बात नहीं कि अर्से से समाज में जिल्लत की जिन्दगी जी रहे किन्नरों को आगामी दिनों में लोग हर क्षेत्र में खुले दिल से समानता के साथ स्वीकारेंगे। हम जानते हैं कि ईश्वर की बनाई रचना अनुसार स्त्री और पुरुष के अलावा एक तीसरा वर्ग भी है जिसे समाज में किन्नर कहा जाता है। उनकी शारीरिक बनावट और लिंग असंतुलन में उनका कोई दोष नहीं है इसके बावजूद समाज में किन्नरों के साथ अपराधियों की तरह अरसे से दोयम दर्जे का व्यवहार किया जा रहा है। पश्चिमी देशों में नागरिक अधिकारों के प्रति संवेदनशीलता जगजाहिर है। वहां किन्नरों के प्रति समाज में न ही दोयम दर्जे का भाव नहीं है न ही उनकी लैंगिक भिन्नता के कारण वे समाज की मुख्य धारा से अलग हैं।

भारत में इससे इतर हालत काफ़ी खराब रहे हैं। पुरुष और स्त्री से अलग तीसरे लिंग वाले नागरिक के प्रति समाज में दोयम दर्जे का व्यवहार आए दिन देखा जाता है। किन्नर समाज में रहकर भी समाज में शामिल नहीं हैं। उनकी दुनिया जैसे एकदम अलग कर दी गई है। समाज का बहुसंख्यक वर्ग किन्नरों को सिर्फ ताली पीटकर नाचने गाने वाले ऐसे इंसान मानता है जो बाकी दुनिया से एकदम अलग हैं। दुआएं देते नाचते गाते किन्नर एक नागरिक के रूप में किस तरह असमानता का सामना कर रहे हैं लोग देख ही नहीं पाते। वे विदूषक का जीवन जीने के लिए अभिशप्त रहे हैं। इन सबके बावजूद किन्नरों की राजनैतिक उपस्थिति समाज में बड़े बदलाव का वातावरण बना रही है। आम लोगों की तरह बीबी बच्चों वाला जीवन न जीने के कारण कहीं न कहीं लोग मानते हैं कि उनका राजनैतिक जीवन परिवार के स्वार्थों से भरा नहीं होगा। आम मतदाता चुनाव में बाकी उम्मीदवारों को धता बताते हुए किन्नरों को अपना वोट देते हुए शायद यही मंशा जता रहे हैं। देश में होने वाले चुनावों में अब किन्नर प्रत्याशियों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। 25 अप्रैल 2014 ने भारतीय समाज में किन्नरों की स्वतंत्र पहचान स्थापित की है। देश में इस तारीख से उन्हें तीसरे ट्रांसजेंडर के रूप में तीसरे लिंग की पात्रता हासिल हुई है। वे अब पुरुष और स्त्री वर्ग से अलग अपनी स्वतंत्र पहचान रखते हैं। किन्नरों के लिए राजनीति का द्वार मध्यप्रदेश में शबनम मौसी के साहस के कारण खुला। वे शहडोल जिले के सोहागपुर क्षेत्र से साल 2000 में पहली दफ़ चुनाव लड़कर निर्दलीय विधायक बनीं। इसके बाद देश में कई किन्नरों ने अपनी किस्मत राजनीति में आजमाई है। मप्र विधानसभा चुनाव 2018 में अंबाह से किन्नर प्रत्याशी को बंपर वोट मिले। ग्वालियर में कांग्रेस के चुनावी अभियान के वक्त आधा दर्जन किन्नर समारोहपूर्वक कांग्रेस में शामिल किए गए। किन्नरों की यह यात्रा बराबर जारी है। देश के अन्य राज्यों की तुलना में दक्षिणी राज्यों में किन्नरों के बीच अधिक राजनैतिक महत्वकांक्षा देखी जा रही है। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी ने गत दिवस जिन अप्सरा रेड्डी को राष्ट्रीय महासचिव बनाया है वो तमिलनाडु की हैं और भाजपा अध्यक्ष अमित शाह के सामने 2016 में भाजपा की सदस्य ले चुकी थीं। राजनीति में आगे बढ़ने के लिए सक्रिय अप्सरा आखिरकार दिल्ली की राजनीति में दमदारी से आई हैं। उन्हें राहुल गांधी और महिला कांग्रेस की राष्ट्रीय अध्यक्ष सुष्मिता देव ने अपनी उपस्थिति में कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव के रूप में भीडिया से मुखातिब कराया। अप्सरा रेड्डी ने इस जिम्मेदारी पर कहा कि वे भावुक हैं और उन्हें अपनी जिम्मेदारियों से वाकिफ हैं। वे राजनीति के जरिए जनसेवा का काम ईमानदारी से करेंगी। राष्ट्रीय राजनीति में अप्सरा का पहुंचना किन्नरों के लिए न केवल एक प्रेरणा देगा बल्कि ये समाज में किन्नरों की स्वीकार्यता और सम्मान की दिशा में बड़ा कदम है। समाज में उनके नागरिक अधिकारों को देश के राजनैतिक दलों की तरह आम नागरिक पूरा महत्व देंगे फ़िलहाल तो यही आशा की जानी चाहिए।

विवेक कुमार पाठक
(ये लेखक के अपने विचार हैं)

राज-काज

मंदिर मामले में फिर नई बेंच

एक बार फिर सुप्रीम कोर्ट में राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद मामले की सुनवाई 29 जनवरी तक के लिए टल गई। दरअसल खबर यह रही कि वकील राजीव धवन के द्वारा संविधान पीठ और जस्टिस यूयू ललित पर सवाल खड़े करने के बाद सुप्रीम कोर्ट ने 29 जनवरी तक मामले को टाल दिया है। इसी के साथ कहा गया है कि अब पांच जजों की पीठ में जस्टिस ललित शामिल नहीं होंगे, और नई बेंच का गठन किया जाएगा। इस प्रकार सुनवाई तो दूर अभी बेंच पर ही मामला अटका हुआ है और कहा जा रहा है कि इस मामले से जुड़े 18836 पेज के दस्तावेज हैं, जबकि हाई कोर्ट का फैसला ही 4304 पेज का है, फिर इतनी जल्दी कैसे सुनवाई शुरु हो सकती है। मतलब कहने वाले तो यही कह रहे हैं कि मामला लंबा खिंचेगा, क्योंकि मूल दस्तावेज जो हैं उनमें अरबी, फारसी, संस्कृत, उर्दू और गुरुमुखी में लिखा हुआ है, जिनके ट्रांसलेशन की भी पुष्टि करने की बात कही जा रही है।

नारे में तब्दील होता चौकीदार चोर है

राफेल सौदा मामले को हवा देने के साथ ही विपक्ष ने चौकीदार को ही चोर बताने का जो काम किया अब वह जनता के बीच में नारे के तौर पर पहुंच चुका है। दरअसल कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने जयपुर में चुनावी सभा को संबोधित करते हुए जहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और रक्षामंत्री निर्मला सीतारमण को निशाने पर लिया वहीं उन्होंने कहा कि देश की जनता जान चुकी है कि चौकीदार चोर है। इसके साथ ही सभा में चौकीदार चोर है कि नारे भी लगाए गए। इससे स्पष्ट हो गया कि लोकसभा चुनाव के समय में यह नारा जोर जरुर मारेगा। प्रधानमंत्री मोदी के लोकसभा नहीं पहुंचने पर भी राहुल ने जो कहा उसके लिए उन्हें महिला आयोग ने नोटिस भेज दिया। इस प्रकार मामला अब शुरु हुआ है जो बढ़ेगा ही बढ़ेगा।

घाटी के हालात बयां करता इस्तीफा

सिविल सेवा परीक्षा 2010 में टॉप करने वाले जम्मू-कश्मीर के नौजवान अफसर शाह फैसल ने आखिरकार अपनी नौकरी से इस्तीफा दे दिया। इसके साथ ही शाह फैसल ने इस्तीफे की वजह कश्मीर में कथित हत्याओं और इन मामलों में केंद्र की ओर से गंभीर प्रयास नहीं किए जाने को बताया है। यही नहीं बल्कि शाह फैसल ने तो सोशल मीडिया के फेसबुक मंच पर एक बयान जारी करते हुए यहां तक लिख दिया है कि उनका इस्तीफा, श्जम्मू कश्मीर राज्य की विशेष पहचान पर कपटपूर्ण हमलों तथा भारत में अति-राष्ट्रवाद के नाम पर असहिष्णुता एवं नफरत की बढ़ती संस्कृति के विरुद्ध है। इस पर जानकारों ने कहना शुरु कर दिया है कि शाह फैसल जैसे अफसर का इस्तीफा सही मायने में घाटी के हालात को बयां करता है, जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। इसलिए जम्मू-कश्मीर के हालात पर केंद्र को जल्द से जल्द कार्रवाई करनी चाहिए।

सिद्धू को सुरक्षा की जरुरत

खबर है कि पंजाब सरकार ने कैबिनेट मंत्री नवजोत सिंह सिद्धू और उनके घर की सुरक्षा बढ़ा दी है। सिद्धू को एक बुलेटप्रूफ वाहन भी मुहैया कराया गया। यह सब धमकियों के मद्देनजर किया जाना बताया जा रहा है। लेकिन सवाल यह उठता है कि जिस तरह से सिद्धू मस्तमौला वाली जिंदगी जीते हैं उसमें सुरक्षा को तो कोई स्थान मिलना ही नहीं चाहिए। आखिर लगातार हंसी-मजाक और अपने काम से वास्ता रखने वाले को कोई क्योंकर हानि पहुंचाने की कोशिश करेगा। यह सब राजनीतिक षडयंत्र है और राजनीतिक हमलों के मद्देनजर ही सुरक्षा की आवश्यकता है। राज्य सरकार तो यही कहती है कि शिरोमणि अकाली दल के साथ बेहद खराब हो चुके रिश्ते और ड्रग्स माफिया के खिलाफ आवाज बुलंद करने के कारण सिद्धू की जान को खतरा पैदा कर रहे हैं।

रथ यात्रा अब आसान नहीं

भाजपा की पश्चिम बंगाल इकाई का कहना है कि राज्य में प्रस्तावित रथ यात्रा कार्यक्रम के लिए अनुमति मांगने के वास्ते वह उच्चतम न्यायालय का दरवाजा भी खटखटाएगी। दरअसल पश्चिम बंगाल में भाजपा के महत्वाकांक्षी रोड शो को उस वक्त झटका लग गया जबकि कोलकाता उच्च न्यायालय की खंड पीठ ने रोड शो को अनुमति देने वाले एकल पीठ के फैसले को रद्द कर दिया। इसे देखते हुए जानकार कह रहे हैं कि भले ही रथ यात्रा की इजाजत सुप्रीम कोर्ट से पाटीं ले आए लेकिन अब भाजपा के लिए इस तरह की रथ यात्राएं निकालना आसान काम नहीं होगा, क्योंकि इस पर सभी की निगाहें होंगी।

राष्ट्रपति का फैसला भी अवैध

क्या आप सोच सकते हैं कि किसी देश के राष्ट्रपति के द्वारा लिए गए फैसले को अदालत द्वारा अवैध भी करार दिया जा सकता है। जी हाँ श्रीलंका में ऐसा ही कुछ हुआ है, जिसके तहत संसद भंग करने के राष्ट्रपति मैत्रीपाला सिरीसेना के फैसले को सुप्रीम कोर्ट ने अवैध ठहराया है। गौरतलब है कि 26 अक्टूबर को राष्ट्रपति ने प्रधानमंत्री रानिल विक्रमसंघे को हटाकर उनकी जगह महिंदा राजपक्षे को देश का प्रधानमंत्री बना दिया था। इसके बाद बहुमत साबित करने में नाकाम रहने की सूरत में सिरीसेना ने संसद को भंग कर 5 जनवरी को चुनाव की घोषणा की थी। मामला अदालत तक पहुंचा जहां राष्ट्रपति के फैसले को अवैध करार दिया गया।